2018-19

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February - 2019

SPECIAL ISSUE- 158

खण्ड - पाँच

समकालीन हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

विशेषांक संपादक :

डॉ.सौ. सुरैय्या इसुफअली शेख

असोसिएट प्रोफेसर तथा शोध निर्देशक

अध्यक्षा - हिंदी विभाग

मा.ह. महाडीक कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,

मोडनिंब, तह. माढा, जि. सोलापुर, महाराष्ट्र-भारत.

अध्यक्षा - हिंदी अध्ययन मंडल, सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर

सदस्या - व्यवस्थापन, अकादमिक परिषद, सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर

मुख्य संपादक :

डॉ. धनराज धनगर

This Journal is indexed in :

- UGC Approved Journal
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February -2019 Special Issue – 158

समकालीन हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

खंड-५

विशेषांक संपादक

डॉ. सुरैय्या इसुफअल्ली शेख

असोसिएट प्रोफेसर तथा शोध निर्देशक

अध्यक्षा, हिंदी विभाग,

मा.ह.महाडीक कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,

मोडनिंब, तह. माढा, जि. सोलापुर

अध्यक्षा- हिंदी अध्ययन मंडल, सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर

सदस्या- व्यवस्थापन, अकादमिक परिषद

सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 800/-

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/ लेखिका	पृ. क्र.
1	मैत्रयी पुष्पा की आत्मकथा – स्त्री विमर्श	प्राचार्य डॉ. अनंत शिंगाडे	07
2	हिंदी साहित्य और महिला उपन्यासकार	डॉ. सौ. सुरैय्या इसुफअल्ली शेख	09
3	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में चित्रित नारी समस्या	डॉ. सुब्राव जाधव	17
4	सिने दुनिया में बदलते भारतीय नारी के चित्र	प्रा. विद्या खाडे	19
5	अनारो' में नारी अस्मिता	डॉ. विनायक खरटमल	22
6	आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री की संवेदना	प्रा. मानसी शिरगावकर	26
7	डॉ. नीरजा माधव के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन की समस्याएँ	इसुफअल्ली शेख	29
8	समकालीन हिंदी साहित्य में नारी विमर्श	डॉ. सौदागर साळुंखे	31
9	महिला राचानाकारों के कला साहित्य में नारी विमर्श	प्रा. आशा गायकवाड	34
10	मणि मधुकर कृत उपन्यास 'मेरी स्त्रियाँ 'में चित्रित नारी जीवन	प्रा. मुजावर जैनु हमिद	39
11	स्त्री विमर्श के आईने में 'रसीदी टिकट'	शिल्पा शर्मा	41
12	विनोद कुमार शुक्ल के कथा साहित्य ने नारी विमर्श	श्रीमती शिकलकर सुलताना गफूर	45
13	दस द्वारे के पिजरे में छटपटाता स्त्री मन	कु. सुप्रिया टापसे	48
14	समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श (उपन्यास साहित्य के विशेष संदर्भ में)	स्मृतिरेखा नायक	51
15	'दलित कहानियों में अभिव्यक्त चेतना- संघर्ष और प्रतिरोध	झिल्ली नायक	55
16	संतप्त में दलित पीडा	डॉ. सविता तायडे	60
17	दलित साहित्य का मूल आधार : मुख्याधारा का समाजशास्त्र एवं दलित जीवन	लक्ष्मी प्रसाद कर्ष	63
18	हिंदी कहानियो में दलित चित्रण	डॉ. वर्षा गायकवाड	71
19	आदिवासी जीवन 'पुरवाई' उपन्यास के विशेष संदर्भ में	पूजा शर्मा	74
20	'वरखा रचाई' उपन्यास में आदिवासी जीवन का यथार्थ	गुंड सचिन	77
21	प्रगतीवादी नारी विमर्श का दस्तावेज आदिवसी उपन्यास 'जंगल के फुल'	डॉ.मा.ना.गायकवाड	81
22	जंगल के दावेदार ओर आदिवासी जीवन संघर्ष	शाजीया बशीर	87
23	उपन्यास का स्वरूप	साहेबराव काम्बले	92
24	बाल साहित्य : एक परिचय	डॉ. फैमिदा बिजापूरे	94
25	डॉ. नीरजा माधव की कहानियों में बच्चो की चिंता	डॉ.अनिल कांबळे	96
26	हिंदी कहानियों में वृद्धों के जुल्म की एक झलक	डॉ. हसनखान के कुलकर्णी	98
27	सूर्यबाला की कहानियों में चित्रित वृद्ध जीवन	प्रा. संजीवनी पाटील	102
28	किन्नरों की मुख्य समस्याएँ	राज बहादुर गौतम	105
29	चित्रा मुद्गल कृत 'पोस्ट बॉक्स नं- 203 नाला सोपारा' में विनोद नामक किन्नर की करूण गाथा	पी. आर. सनोज	110
30	हिंदी और मराठी रेखाचित्रो में प्रयुक्त भाषा	प्रा. अंजली जाधव	112
31	भारत के प्राचीन शिक्षा व्यवस्था में गुरुकुल का महत्त्व	नीरज कुमार सिन्हा	115
32	साहित्यिक हिंदी पत्रकारिता में 'धर्मयुग पत्रिका' का योगदान	बिनीता मिश्रा	120
33	'वसुन्धरा' में अशोक वाजपेयी	डॉ. गोविन्द पांडव	124
34	निराला के काव्य में दलित चेतना	डॉ.लोकेश्वर सिंन्हा, राकेश तिवारी	127
35	हिंदी –तेलगु दलित कविता में अम्बेडकरवादी चेतना	डॉ. हरिराम पसुपुलेटी	131

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 158 – समकालीन हिंदी साहित्य में विविध विमर्श
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February-2019

सूर्यबाला की कहानियों में चित्रित वृद्ध जीवन

प्रा. संजीवनी संदीप पाटील
हिंदी विभागाध्यक्ष
कला, वाणिज्य एंव विज्ञान महाविद्यालय, गडहिंग्लज

प्रस्तावना :

साहित्य हमेशा जिंदगी से जुडा होता है । साहित्य की विभिन्न विधाओं के जरिए जीवन की यथार्थता दिखाई जाती है । साहित्य कि अन्य विधाओं की अपेक्षा कहानी छोटी और ललित होने के कारण कहानीकार अपने मन की बात को आसानी से पाठकों तक पहुंचा सकता है । 21 वी सदी की कहानियॉ मनुष्य के यथार्थ, विसंगतियॉ आदि के अधिक निकट बन गई है । समाज में व्याप्त रूढियों पर प्रश्न चिन्ह लगाते हुए उसके खिलाफ वह आवाज बुलंद करती है। हमारे आसपास ऐसी कई समस्याएँ है जो बहुत पहले से ही समाज में व्यापक है और जो वर्तमान समय में और अधिक गहन बन गई है । उन समस्याओं मे प्रमुख समस्या के रूप में 'वृद्ध समस्या' है।

कोई भी समाज या व्यक्ति अपने समय की परिस्थितियों से बहुत प्रभावित रहता है। 21 वी सदी का समय नव उपनिवेशवाद और भूमंडलीकरण का समय है। नवउपनिवेशवाद और भूमंडलीकरण के चंगुल में फंसी आज वर्तमान की पीढी ने उपभोक्तावादी दृष्टिकोण को अपना लिया है। इस उपयोगितावादी दृष्टिकोण के कारण नई पीढी हर चीज को उसकी उपयोगिता के आधार पर परख रही है। इस गलत दृष्टिकोण से आपसी संबंध जटिल बन रहे है। वर्तमान पीढी पाश्यात्त्य संस्कृती की 'नेम दक जीतवू बनसजनतम' से अत्याधिक प्रभावित है। इस कारण वे अपने वृद्ध मॉ–बाप को केवल एक भौतिक वस्तु की तरह मानकर उनका मात्र उपभोग करती है और बाद में कुडे के समान उनकी उपेक्षा कर देते है। इस कारण समाज का एक बहुत बडा हिस्सा उपेक्षित रह गया है।

वृद्ध जीवन :

सूर्यबाला हिन्दी की उन लेखिकाओं में से एक है, जिन्होंने अपने सृजनकर्म को हमेशा गंभीरता से लिया है। वे अपनी सृजनात्मक जिम्मेदारी को उन सामाजिक सरोकारों और मानवीय मूल्यों से जोडकर चलती है, जिनका साहित्य से गहरा संबंध होता है। परिवार, समाज, मानवीय, संबंध, इच्छाएँ, आकांक्षाएँ, सपने, सपनों को समझने, उनके साथ साझा होने की भावना, ये तमाम विशेषताएँ सूर्यबाला की कहानियों में इतनी सघनता के साथ समाहित है कि पाठक स्वयं को इनमें देखने लगता है।

अकेलापन :

सूर्यबाला की कहानी 'सौगात' में पत्नी की मृत्यु के पश्चात् एक वृद्ध व्यक्ति के अकेलेपन का चित्रण किया है। साथ ही अकेलेपन से आया मानसिक दबाव वडी मार्मिकता से चित्रित किया है। पत्नी की मृत्यु के पश्चात्य वृद्ध पति को पूछने वाला कोई नही है। पत्नी की मृत्यु के बाद उन्होंने बडे लाड–प्यार से अपनी संतानो को बडा किया। खुद कष्ट उठाकर बच्चों की हर मॉग पूरी की। वृद्धावस्था मे जब उन्हें सहारे की आवश्यकता पडी तो उनकी संताने मुँह मोड लेती है। उनकी ऑखो का ऑपरेशन होनेपर उनकी वृद्धा भावज उनका साथ देती है जो स्वयं अकेली है। पर काम के बाद वेटा काकी को वापस भेजना चाहता है। पिता चाहते है कि वह कुछ दिन और रूके– ''यही सोचता

था, जरा कुछ दिन और...'', ''कुछ दिन और क्यों..? अब तो ऑपरेशन हो गया। अस्पतल से छुट्टी... जहॉ तक नाश्ते–खाने का सवाल है... आपको टाईम से पहुंचही जाता है, अब आप बुढे हुए, भजन–पूजा में ध्यान लगाइए।''1

बच्चों से उपेक्षा :

पिता की मानसिक भूख और पीडा को बिना समझे बच्चा उनका मजाक उडाता है। उसे लगता है कि वृद्ध होने पर भी पिता भौतिक चाह कम नही हुई। बल्कि वास्तव में पिता केवल अपनापे के, किसी के स्नेहपूर्ण व्यवहार के भूखे है। बच्चे सोचते है कि केवल खाना समय पर देने से पिता का ध्यान रखा जा सकता है। उनकी जिम्मेदारी पूरी हो जाती है। पर बुढापे में मनुष्य बात करने को भूखा रहता है, साथ रहने की चाह रखता है। मन की इस असंतुलित अवस्था के कारण वे उदासिन बन जाते है। घरेलू कामों में और अन्य कामों में अपने को व्यस्त न रख पाने के कारण और परिवारवालों की उपेक्षा के कारण बुढे बहुत ही अकेले पड जाते है। अपनी हर जरूरत के लिए बहू पर निर्भर होना भी उनके मन को संघर्षमय बना देता है।

आपसी बिछुडन :

'सॉझवाती' कहानी में भी वृद्धों की छटपटाहट दिखाने की कोशिश सूर्यबालाजी करती है। अस्सी साल के पति को देख बहत्तर साल की पत्नी खुश हो जाती है। सूखी घास की ढेरी–सी अपंग बेगम खाट पर बेजान पडी है। दूर से उसका अस्सी साल का पति उसे मिलने आया है। अपने हिसाब से बच्चों ने मॉ–बाप का बटवॉरा कर दिया है। मॉ एक बेटे के पास, पिता दुसरे बेटे के पास । कोई यह नही सोचता दोनों को एक दुसरे की जरूरत है। पति भूखा–प्यासा बीवी से मिलने आया है, तो पत्नी दुखी होती है, क्योंकि उनके यहॉ का खाना भी खत्म हो चूका है। वह पति से कहती है कि बेटे से बात करेंगे कि हम साथ रहेंगे। पर वे मना कर देते है। एक–दुसरे के प्रति प्रेम, अपनाया देख पाठक भी भावविभोर हो उठते है। मरते दम तक वे अपने लिए नहीं बल्कि बच्चों के लिए दुआ मॉगते है।

वृद्ध स्वंय तकलीफ उठाते है पर बच्चों पर बोझ बनाना नहीं चाहतें। यहां जरूरी है कि बच्चों को भी मॉ बाप की भावनाओं की कद्र करनी चाहिए।

विदेश में बसी संतान :

विदेश से सात साल के बाद लौटा बेटा देख माता–पिता अपने सारे दुख दर्द भूल जाते है। उसकी हर खूशी का खयाल रखने की जी जान से कोशिश करते है। बेटा जो विदेशी संस्कृती में घुल–मिल गया है, अपने आप को बचाकर रखता है। न जादा खाता है, न बात करता है। उसकी बातों में अपनापन नही है। उसका व्यवहार देख मॉ का दिल टूट जाता है। पिता एवं उसके पति उसे समझाते है। पर वर सोचती है शायद अगली बार उनका बेटा विदेश से नही लौटेगा। वहीं बस जाएगा। बेटे की आने की खुशी, उनकी भाग–दौड सब देख भी बेटा अनदेखा करता है। उपर से अत्याधिक प्यार से उब जाता है। उसका रूखा एंव स्नेहहिन व्यवहार देख माता–पिता अंदर से टूट जाते है। उसकी याद में रातभर तडपनेवाली मॉ, रोनेवाली मॉ, उसके मिलने पर रूखे व्यवहार से दहल जाती है। बिलकुल मेहमान की तरह दो–तीन दिन के बाद बेटा वापस चला जाता है।

आज इकाई परिवार के कारण विदेश में रहनेवाले बच्चों के मॉ–बाप अकेले दिन काटते है। उनका खयाल रखने के लिए उनके पास कोई नही है। पाश्चात्य संस्कृती के अंधानुकरन एंव पैसों की चाह ने मॉ–बाप से बच्चे दूर जा रहे है। शायद बच्चे यह भूलते जा रहे है की, वृद्ध माता–पिता को संभालना उनकी जिम्मेदारी है।

आत्मसंघर्ष एवं अनाथत्व :

सूर्यबाला ने अपनी कहानियों के जरिए वृद्धजनों का अकेलापन उनका आत्मसंघर्ष एवं अनाथत्व को प्रस्तुत किया है। वर्तमान समय में नई पीढी की मान्यताएँ बदल रही है। पर उसी गति से पुरानी पीढी की मान्यताएँ बदली जा नही सकती। इस कारण दोनो पीढियों के जीवन मूल्यों के बीच गहरा अंतराल आ रहा है। परिणामतः नई पीढी के दृष्टिकोण और जीवन मूल्यों को पुरानी पीढी नकारती है, और पुरानी पीढी के मूल्यों का नई पीढी मजाक उडाती है। इस तरह उत्पन्न संघर्ष आज हर घर में, परिवार में दिख रहा है।

निष्कर्ष :

21 वी सदी का साहित्य भूमंडलीकरण से प्रभावित साहित्य है। 'नेम 'दक जीतवू बनसजनतम' वाली संस्कृती आज साहित्य में दिख रही है। भूमंडलीकरण के चंगूल मे फॅसी वर्तमान पीढी ने उपभोक्तावादी दृष्टिकोण अपनाया है। मानव जीवन तथा सामाजिक स्थिति हमेशा बदलता रहता है। इस बदलती युगीन सच्चाइयों को नए दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत करना ही रचनाकार का कर्तव्य है। वृद्धावस्था उम्र का एक ऐसा पडाव है जहाँ पहुँचकर व्यक्ति अपने आप को निरर्थकसा, महसूस करने लगता है। सेवा समाप्ति या बच्चों की शादी के बाद वृद्धों के पास बहुत अधिक समय रहता है। उनके लिए किसी के पास समय नहीं रहता। इसमें गलती न युवाओं की है न वृद्धों की। आज की भागं भागवाली हालात ने सबको जकडकर रख दिया है। पैसा सब के पास है पर वक्त किसी के पास नहीं है। तो वृद्धों को भी हठवादिता छोड बच्चों के साथ मेल रखना होगा। स्वयं अपने मनोरंजन के साधन जुटाने होगे। साथ ही जब–तक वे काम करने के काबिल है तब तक वे किसी संगठन में जाकर समय का सदुपयोग करें।

युवाओं को तथा नई पीढी को उनके साथ वक्त बिताना होगा। वृद्ध पैसा नहीं चाहते वे केवल आपके स्नेह के, प्यार के भूखे है इस बात को समझना होगा। माता–पिता अकेले होने पर उन्हें अपने साथ रखना होगा। उनके सलाह–मशवरें से काम करना होगा। तभी शायद यह समस्या हल हो सकेगी।

सूर्यबाला जी ने इन कहानियों के माध्यम से हमारा वृद्ध जीवन की ओर देखने का नजरिया बदलने का प्रयास किया है। दो पीढीयों के लोग एक–एक कदम पीछे आए, खुलकर बात करें यही उनकी कोशिश रहीं हैं।

संदर्भः

1. गिरिराज शरण, सौगात, वृद्धावस्था की कहानियॉ, पृ.144
2. सॉझबाती–सूर्यबाला
3. आज का हिंदा साहित्य : संवेदना और दृष्टि– रामदरश मिश्र
4. 21 कहानियाँ – सूर्यबाला
5. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन